12 / 03 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

चैतन्य पुष्प बन रंग रूप और खुशबू भरने का अनुभव

➢➢ मैं चैतन्य शक्ति आत्मा हूं

➳ _ ➳ मैं फरिश्ताय ड्रेस पहन

➳ _ ➳ लाइट के शरीर में

➳ _ ➳ उड़ चलती हूं

→ मैं पहुंचती हूं एक फूलों के बाजार के ऊपर

→ अनेक पुष्प है इस बाजार में

- कुछ रंग वाले है कुछ में रूप है और
- कुछ में खुशबू भी है

→ कुछ रंग वाले पुष्प दूर से ही

- बड़े आकर्षक लगते हैं

→ लेकिन जिनमें रूप नहीं

- उनकी इस बाजार में कोई वैल्यू नहीं

➳ _ ➳ एक तरफ माहौल रूहानी है

➳ _ ➳ इधर वह पुष्प है जिनमें

→ रंग है रूप है और

→ खुशबू भी है

→ यह खुशबू

- स्थूल नेत्रों के आकलन से परे है

→ पुष्प का यह गुण, खुशबू,

- स्वतः ही सबको आकर्षित कर रहा है

➢➢ मैं फूल हूं तेरी बगिया का ओ मेरे बागबान

➳ _ ➳ मैं चैतन्य आत्मा ईश्वरी बगीचे का रूहानी पुष्प हूँ

→ मेरा बाबा है इस बगिया का बागबान

→ तेरा शुक्रिया बाबा तू रखता इतना ध्यान

→ बाप की मोहब्बत के पानी में

→ शक्तियों की धूप में

- पल रहा है हर फूल

→ नाज है हमें अपने भाग्य पर

- जो हमें मिला भगवान ही बागवान

→ नाज है बाबा को भी

- अपनी बगिया पर
- अपने पुष्पों पर
- कल्प के इस मिलन पर

➳ _ ➳ एक ही बागवान

➳ _ ➳ एक ही बगीचा

→ पर पुष्प है अनेक

→ अनेक वैरायटी के चैतन्य पुष्प

➢➢ तूने भरी है खुशबू मुझ में महके सारा जहां

➳ _ ➳ मैं रंग रूप और खुशबू से भरी हुई रूह हूँ

➳ _ ➳ बाबा के संग से

→ ज्ञान के रंग में रंग गई हूं

➳ _ ➳ यह ज्ञान रूपी रंग

→ दूर से ही अन्य आत्माओं को आकर्षित करता है

➳ _ ➳ मैं वह पुष्प हूं

→ सदा भगवान की याद में रहता है जो

→ इस योग अग्नि से

■ मेरा रूप निखर गया है

→ मैं ज्ञान से भरपूर रंगवान पुष्प हूं

→ मैं योगयुक्त रूपवान पुष्प हूं

→ मेरी खुशबू है दिव्य गुणों की खुशबू

■ इस खुशबू में प्रेम है

■ शांति है

■ आनंद है

■ सुख है

■ पवित्र पुष्प हूँ मैं

→ इन दिव्य गुणों की खुशबू से

■ समस्त वायुमंडल को रूहानी बना रही हूं मैं

→ अपने श्रेष्ठ संकल्पों के आधार से

■ यह खुशबू दूर-दूर तक फैला रही हूं

➳ _ ➳ मैं अपने दिव्य गुणों से

→ स्वयं पर राज्य करती हूं

→ सर्व के दिलों पर राज करती हूं

■ मैं दिव्य गुणवान राज्य अधिकारी आत्मा हूं